तात्पर्य

भगवद्गीता के प्रारम्भ में अर्जुन भीष्म, द्रोण आदि पूज्य वृद्धों और गुरुजनों के वध की आशंका से चिन्तित था। परन्तु श्रीकृष्ण ने आदेश दिया कि पितामह का वध करने में भी उसे भय नहीं मानना चाहिए। जब भरी सभा में द्रौपदी का चीरहरण किया जा रहा था, तो भीष्म-द्रोण दोनों चुप बैठे रहे। ऐसे अवसर पर उनका कर्तव्य था कि इस अनाचार का विरोध करते; परन्तु उन्होंने इसमें प्रमाद किया और इसलिए अब वे वध के योग्य थे। श्रीकृष्ण ने अर्जुन के समक्ष अपना विश्वरूप यह दिखाने को प्रकट किया कि अपने पापकर्मों के फलस्वरूप ये सब पहले ही काल-कवलित हो चुके हैं। अर्जुन को वह दृश्य इसलिए भी दिखाया गया, क्योंकि शान्तस्वभाव भक्त सामान्यतः ऐसा भयंकर कर्म नहीं कर सकते। विश्वरूप के प्राकट्य का यह सब प्रयोजन सिद्ध हो गया। अब अर्जुन की इच्छा के अनुसार श्रीकृष्ण उसे अपना चतुर्भुज रूप दिखा रहे हैं। भगवद्भक्त विश्वरूप में अधिक रुचि नहीं रखता, क्योंकि उसके साथ रस और भाव का परस्पर आदान-प्रदान नहीं हो सकता। भक्त चाहता है कि वह श्रीभगवान् को अपना सादर भक्तिभाव अर्पित करे। इसलिए वह श्रीकृष्ण के द्विभुज अथवा चतुर्भुज रूप का ही दर्शन चाहता है, जिससे उनके साथ प्रेममय सेवारस का आस्वादन कर सके।

सञ्जय उवाच।

इत्यर्जुनं वासुदेवस्तथोक्त्वा
स्वकं रूपं दर्शयामास भूयः।
आश्वासयामास च भीतमेनं
भूत्वा पुनः सौम्यवपुर्महात्मा।।५०।।

सञ्जयः उवाच=संजय ने कहा; **इति**=इस प्रकार; **अर्जुनम्**=अर्जुन के प्रति; **वासुदेवः**=भगवान् वासुदेव (कृष्ण) ने; **तथा**=वैसे ही; **उक्त्वा**=कह कर; **स्वकम्**=अपना; **रूपम्**=रूप; **दर्शयामास**=दिखाया; **भूयः**=फिर; **आश्वासयामास**=आश्वासन दिया; **च**=तथा; **भीतम्**=भयभीत अर्जुन को; **एनम्**=इस; **भूत्वा पुनः**=फिर होकर; **सौम्य वपुः**=सुन्दर रूपवान्; **महात्मा**=महापुरुष श्रीकृष्ण (ने)।

अनुवाद

संजय ने कहा, भगवान् श्रीकृष्ण ने अर्जुन से इस प्रकार कहकर उसे चतुर्भुज रूप दिखाया और अन्त में फिर अपना द्विभुज रूप धारण करके भयभीत अर्जुन को आश्वासन दिया।।५०।।

तात्पर्य

जब वसुदेव और देवकी के पुत्ररूप में श्रीकृष्ण का प्रादुर्भाव हुआ, तो पहले-पहले वे चतुर्भुज नारायण रूप में ही प्रकट हुए थे। तत्पश्चात्, माता-पिता के